International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 03(II), July - September, 2023, pp. 141-144

बुनकरों की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति का एक अध्ययन (बिहार छपरा (सारण) प्रमंडल के विशेष सन्दर्भ में)

अनिल कुमार प्रसाद*
डॉ. चन्द्रकांत अवस्थी**

सार

हथकरघा उद्योग सम्पूर्ण भारत में फैला हुआ है। ग्रामीण रोजगार एवं आय पर पड़ने वाले आर्थिक प्रभाव की दृष्टि से कृषि के पश्चात् इस उद्योग का दूसरा महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीनकाल से ही इस उद्योग में लगे बुनकरों की कारीगरी की ख्याति देश–विदेशों में फैली हुई थी। उनका बनाया गया माल देश–विदेश में हाथों हाथ बिक जाता था और यह इज्जत की जिन्दगी बिताते थे। लेकिन लगभग ढाई सौ साल हुए अंग्रेजी हुकुमत ने आकर इस उद्योग पर धावा बोल दिया और इंग्लैण्ड से मिलों के कपड़े यहाँ के बाजारों में पाट दिए। इंग्लैण्ड की तरह हिन्दुस्तान में भी मिले लग गयी और उनकी बनाई चीजे घर–घर में छा गयी। ऐसी हालात में हमारे बुनकरों की आर्थिक स्थिति का गिरना उसी समय से स्वाभाविक था। उल्लेखनीय है कि 1813 में कलकत्ता में 20 लाख पाउण्ड की सूती वस्त्र लन्दन को निर्यात किया गया परन्तु 1830 में कलकत्ता में इंग्लैण्ड से 20 लाख का सालाना आयात किया गया। ये उद्योग बिहार छपरा (सारण) प्रमंडल में सदियों पुराना है। यहाँ आज भी इस उद्योगों को जिन्दा रखने के लिए गाँवों गाँव में खेती होता है। उत्पादन के दृष्टिकोण जो बनी हुई वस्त्र है, शायद और राज्यों में ऐसा नहीं मिल सकता है, क्योंकि यहाँ का प्राकृतिक खेती कहा जाए या बुनकरों की कारीगरी कहा जाए। इस उद्योग से लगभग 25 हजार कामगारों को हर रोज परोक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलता है। यहाँ से बने वस्त्रों का निर्यात कर रोजाना करीब निर्यात कर करीब 100 करोड़ रूपये का कारोबार होता है। लेकिन बदलते दौर ने इनका और इनके परिवार के साथ आर्थिक समस्या की ओर छोड़ दिया है।

शब्दकोशः *हथकरघा उद्योग, ग्रामीण रोजगार, आर्थिक प्रभाव, आर्थिक समस्या, प्राकृतिक खेती।*

प्रस्तावना

बुनकर वर्ग का हथकरघा उद्योग में बहुत बड़ा योगदान है। सूती की रंगाई पश्चात् बुनाई का कार्य किया जाता है। बुनकरों को धागों की आपूर्ति करने हेतु राज्य एवं अन्य राज्यों से आयात करना पड़ता है। वस्त्र का उत्पादन कुशल बुनकरों द्वारा तथा इनकी देखरेख में साधारण बुनकरों द्वारा करघे पर किया जाता है। जब करघे पर ताना चढ़ाया जाता है तब दो से तीन दिन तक बुनाई कार्य नहीं किया जाता है। जिन बुनकर की आर्थिक स्थिति ठीक होती है वे कुछ करघे स्थापित करके ठेके पर कार्य करवाते हैं जो बुनकर कार्य महीने के 5–6 दिन तक परिश्रमिक नहीं मिलता है। बिहार छपरा (सारण) प्रमंडल के अधिकांश बुनकरों की आर्थिक स्थिति बहुत अधिक दयनीय है। यह बुनकर ठेकेदारों तथा व्यापारियों के हाथों सदैव शिकार बने रहते हैं। उनके उत्पादन में कोई न कोई कमी निकालकर कम मजदूरी देते हैं। जिसके परिणामस्वरूप वह अपने परिवार का भरण–पोषण बड़ी कठिनाई से कर पाते हैं। बुनकरों श्रमिकों की संख्या इस प्रकार से हैं–

* शोधार्थी, पी.के. विश्वविद्यालय, करैरा, शिवपुरी, म.प्र.।
** अर्थशास्त्र विभाग, पी.के. विश्वविद्यालय, करैरा, शिवपुरी, म.प्र.।

- **कपास की छटाई करने वाले श्रमिकः** ऐसे श्रमिक सदैव ठेका पर कार्य करते हैं। ठेके पर कार्य करने के कारण वह अधिक से अधिक कार्य करने की कोशिश करते हैं। ऐसे श्रमिक दिन भर कच्चे कपास की छटाई करते हैं, जिसके फलस्वरूप निकलने वाली धूल एवं रूई के रेशे आँखों में बैठ जाते हैं और आँखों से आंसू बहने लगते हैं। इस प्रकार श्रमिक अनुकूल वातावरण के अभाव में विभिन्न रोगों के शिकार होते हैं।
- **धुनाई करने वाले श्रमिकः** धुनाई करने वाले श्रमिक जहाँ धुनाई करते हैं उस कक्ष का आकार लगभग 25 वर्गफुट के होते हैं। धुनाई धनुष एवं गैंदा के सहारे की जाती है। छोटे कमरे होने के कारण रूई के बादल पूरे कमरे में छाये रहते हैं, जिसके परिणामस्वरूप श्रमिक विभिन्न रोगों से पीढ़ित रहते हैं। धुनाई करने वाले श्रमिकों की जल्दी मृत्यु होने से उनके परिवार की आर्थिक स्थिति दयनीय हो जाती है।
- **कताई करने वाले श्रमिकः** जब रूई की धुनाई हो जाती है तब सूत बनाने के लिए कताई शुरू की जाती है। कताई का कार्य अधिकतर घर ही स्त्रियों द्वारा किया जाता है। कताई का कार्य अवरुद्ध हो जाने पर प्रायः उन्हें भूखा मरना पड़ता है। इस प्रकार के कार्य में हिन्दूओं की अपेक्षा मुस्लिम परिवार के लोग अधिक लगे हुए है। सूत की कताई चरखे एवं तकुवें के सहारे की जाती है। इस प्रक्रिया में लगे श्रमिकों की आर्थिक दशा तथा शारीरिक दशा सोचनीय है।
- **तगा खोलने वाले तथा लच्छी बनाने वाले श्रमिकः** तगा खोलने एवं उसकी लच्छी बनाने का कार्य खुले स्थान पर किया जाता है। जिससे लच्छी बनाने में आसानी हो तथा कार्य जल्दी हो सके। इस प्रकार का कार्य अधिकतर ठेके पर किया जाता है। लच्छी बनाने वाले श्रमिकों को बड़ी सावधानी से कार्य करना पड़ता है, क्योंकि थोड़ी सी असावधानी से तगा उलझ जाता है और लच्छा खराब हो सकता है।

बिहार छपरा (सारण) प्रमंडल के अन्तर्गत सिवान जिले के महाराजगंज प्रखण्ड का पसनौली गगन 80 के दशक में हस्तकरघा उद्योग के लिए चर्चित था। गाँव में हस्तकरघा एवं चरखे की खटखट की आवाज की गूंज से गांव गुलजार हुआ करता था। लेकिन समय के साथ बाजार की कमजोर मांग ने पुस्तैनी धंधे पर विराम सा लगा दिया है। बुनकरों में वीरानगी छाई है। कुटीर उद्योग में अपनी अलग पहचान बनाये धंधे से जुड़े दर्जनों मजदूर आज खामोस दिख रहे है। रोज के आभाव में राज्य के अलावा दूसरे प्रदेशों में पलायन कर गया है। साथ ही साथ पूँजी की मार पड़ गयी है। अतीत के आइने में सिमटा पुश्तैनी धंधा समय के साथ धीरे–धीरे थप पड़ता गया। और बुनकर मजदूर गाँव छोड़कर अलग–अलग व्यवसाय में जुट गये। कभी जनता धोती, साड़ी की धूम मचाने वाला हस्तकरघा उद्योगों की आवाज बन्द पड़ गयी है। कपड़ा बुनकर प्रतिदिन अच्छी कमाई कर हंसी खुशी जीवन गुजर बसर करने वाले बुनकर मजदूर फतेहाल है। हालांकि कहने को गाँव में इक्के दुक्के आज भी चरखे से कपड़े की बुनाई होती है। समय के फीके पड़े हस्तकरघा उद्योग से गाँव के करीब 200 परिवार के मजूदर जुड़े हुये थे। जो आज पूंजी के आभाव में मेरठ, मानपुर, दिल्ली, बनारस, कानपुर, कलकत्ता आदि जगहों पर अपनी हुनर दिखा रहे हैं। गांधी बुनकर सहयोग समिति के सदस्य काशीद हुसैन बताते हैं कि पूंजी के अभाव एवं सीमित कमाई के कारण बुनकरों ने इस धंधे से मुंह मोड़ लिया। उन्होंने बताया कि वर्ष 1980 में करीब 50 हैण्डलूम से कपड़े की बुनाई होती थी। महिलायें चरखे से सूत काटने का काम करती थी। सभी परिवार के सदस्य इस कार्य में जुटे रहते थे। लेकिन अधिकांश चरखा आज बेहाल पड़े है। ऐसे कई बुनकर मजदूर बताते हैं कि हैण्डलूम कार्पोरेशन से प्रति हैण्डलूम जरूरत के हिसाब से कच्चा सूत उपलब्ध कराया जाता था। साथ ही बुने हुए कपड़ों को बेचने की जिम्मेदारी भी कार्पोरेशन की ही होती थी। उन्होंने बताया कि वर्ष 2006 में सरकार आपके द्वार कार्यक्रम के तहत क्रमशाला सहआवास के लिए सरकार द्वारा भेजी गई राशि तकनीकि कारणों से लौटा दी गई। उस समय तत्कालीन उद्योग मंत्री अनिल कुमार ने बुनकरों को पुरोत्साहित करने के लिए साईकिल का भी वितरण किया था। बुनकरों को बढ़ावा देने के लिए सरकार द्वारा कई तरह की योजनाएं चलाई जा रही है लेकिन हस्तकरघा उद्योग आज भी ठप्प पड़ा हुआ है, जिससे आर्थिक समस्या उत्पन्न हो रही है।

बिहार छपरा (सारण) प्रमंडल के कुछ जातिगत बुनकर मजदूरों की आर्थिक समस्या को देखने से अध्ययन के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त हुआ है कि धानुक जाति का पुस्तैनी पेशा सुतली काटना और उससे रस्सी बनाना, लेकिन बदलते दौर ने इनका पुस्तैनी पेशा छीन लिया। इस कारण इनके समक्ष जीविकोपार्जन करना चुनौती बन गयी है। जिन्दगी भी इस समाज के मजदूरों को एक रस्सी की तरह उलझा दिया।

दो दशक पूर्व तक सारण प्रमंडल के खेती के कार्य में बैल की मदद से खेती की जाती थी। आज उसकी जगह ट्रैक्टर ने ले ली। इससे कृषि कार्यों के लिए रस्सी पगहा, गलजोरी, बरही आदि की जरूरत खत्म हो गयी। पटसन की रस्सी की जगह प्लास्टिक की आ गयी। इस कारण कुछ वर्ष पूर्व तक समाज में बड़ी भूमिका निभाने वाले धानुक हाशिये पर चले गये। एक जमाने में गांव के बड़े बड़े किसान इस जाति के दरवाजे पर चक्कर लगाते थे लेकिन रस्सी की मांग ही खत्म हो गयी। इसका असर देखने को मिला है कि इस जाति के लोग शहरों की ओर पलायन कर या मजदूरी कर जीविकोपार्जन करने में लगे है। बिहार छपरा (सारण) प्रमंडल के बुनकर मजदूरों का कहना है कि हमारी जिन्दगी एवं रोजी रोटी किसानों के खेती बाड़ी से जुड़ी हुई रही है। लेकिन कृषि कार्य के स्वरूप बदलने के साथ ही धीरे–धीरे इनकी रोजी रोटी छिनती चली गयी।

पहले किसान बड़े पैमाने पर पटसन एवं सनई उगाते थे, जिससे धानुक जाति के बुनकर मजदूरों को पटसन एवं सनई के रेशे मोहाया हो जाते थे। एक किलो तैयार करने में 2 से 3 दिन लगता है। उसमें 1 मजदूर को 2 से 3 दिन काम करने में लग जाते है। उस सूतली को बाजार में बेचे जाने पर 160 से 180 रू0 मिलते हैं। इस कार्य के लिए सरकार द्वारा कोई अनुदान एवं प्रोत्साहन भी नहीं मिलता है। यू0पी0, पंजाब सहित कई प्रदेशों में होती थी रस्सी, पगहा, बरही–बरहा आदि की खरदारी के लिए बिहार छपरा (सारण) प्रमंडल ही नहीं यू0पी0 एवं पंजाब के व्यापारी यहाँ पर सुतली खरीदते थे। स्थानीय बाजारों में भी बहुत आसानी से बिक्री हो जाती थी।

निष्कर्ष

बिहार छपरा (सारण) प्रमंडल के कई हुनरमंद बुनकर कारीगर पुरूस्कृत भी हुए, लेकिन मशीनीकरण के दौर में पर्याप्त पूंजी एवं सरकारी सहायता के अभाव में पारंपरिक कुटीर उद्योग ठप पड़ गया है। इससे जुड़े सिधस्त बुनकर बेरोजगार हो गये है। इनका कहना है कि अगर इसके संरक्षण वंसवर्द्धन की उचित व्यवस्था होता तो यह उद्योग एक बार फिर से जीवित हो सकता है। इससे रोजगार के अवसर भी पैदा होगे अन्यथा बिहार छपरा (सारण) प्रमंडल की हस्तकरघा उद्योग सदा के लिए गुम हो जायेगी। यहाँ के कारोबारियों ने बताया कि सूती एवं ऊनी चादरों की बुनाई हस्तचालित हस्तकरघे से किए जाने के कारण एवं गुणवत्तायुक्त मजबूत एवं टिकांऊ होती थी। सूती चादर की मांग गर्मी में तो ऊनी चादर की जाड़े में मांग बढ़ जाती थी। इससे दोनों मौसम में उनकी इतनी मांग रहती थी कच्चा माल मगवाने के लिए पूंजी की आवश्यकता होती है। इसके अभाव में मांग के अनुरूप चादरों की आपूर्ति न कर पाने के कारण इस कारोबार में वे बुनकर मजदूर पीछे पड़ गये। फलतः धीरे–धीरे रोजगार बन्द होता चला गया।

सुझाव

- बुनकर कामगारों के लिए अलग फण्ड की व्यवस्था होनी चाहिए इसके लिए सरकार को जल्द घोषणा करना होगा।
- किसी भी प्रकार की सरकारी योजनाओं की जानकारी पंचायत प्रखण्ड एवं जिला स्तर पर सभी को जानकारी होना चाहिए।
- बिहार सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाओं की राशि और बढ़ाना चाहिए।
- सबसे बड़ी बात है कि ऐसे मजदूरों को केन्द्र और राज्य सरकार के पास सही आंकड़े उपलब्ध होना चाहिए।
- ऐसे मजदूरों को श्रेणी बनाकर सामाजिक सुरक्षा की व्यवस्था करनी होगी।

- खुले कार्य स्थल की विचारधारा दीवारे और कमरों को सतावाद पदानुक्रम और सामाजिक अलगाव से जुड़ती है, इसे विशेष ध्यान देना होगा।
- किसी भी प्रकार के अपदा के समय ऐसे मजदूरों को उनके रोजगार पर ब्रेक लग जाए तो केन्द्र और राज्य सरकार को अपने स्तर से अलग रोजगार मुहैया कराना होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रभात खबर पटना, 10 जनवरी, 2019 पेज–12
2. आज समाचार सेवा पटना, 05 अप्रैल, 2021 पेज–01
3. Aunstey, Economic Development of India
4. के0के0 रस्तोगी श्रम समस्या सभार समाज कल्याण
5. डॉ0 आर0एस0 कुलश्रेष्ठ, भारत में उद्योगों का संगठन प्रबन्ध एवं वित
6. आर0सी0 सक्सेना, श्रम समस्यायें, समाज कल्याण तथा सुरक्षा
7. Channa, S.N., The Indian Cotton mill Industry.

❖◆❖